



स्कूल से भागने वाले छात्र-छात्राओं की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार : मेवात क्षेत्र के संदर्भ में एक अध्ययन

Naveen, Research Scholar, Department of Education, North East Christian University

Dr. Sarika Goel, Professor, Department of Education, North East Christian University

सार

यह शोध-पत्र मेवात क्षेत्र के स्कूल से भागने वाले छात्र-छात्राओं की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार के अध्ययन पर आधारित है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की मानसिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक समस्याओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन में पाया गया कि विद्यालयी भय, पारिवारिक तनाव, आर्थिक कठिनाइयाँ तथा साथियों का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अध्ययन हेतु 450 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया तथा प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य संकलित किए गए। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विद्यालय से भागने वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी, अध्ययन के प्रति अरुचि तथा मानसिक तनाव अधिक पाया गया। यह अध्ययन विद्यालयी वातावरण को अधिक संवेदनशील एवं छात्र-केंद्रित बनाने की आवश्यकता पर बल देता है।

प्रमुख शब्द

स्कूल से भागना, छात्र मनोदशा, शैक्षिक व्यवहार, मेवात, मानसिक तनाव, विद्यालयी वातावरण

प्रस्तावना

विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख केंद्र होता है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने वाली संस्था नहीं है, बल्कि बालकों के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक तथा भावनात्मक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम भी है। विद्यालय में ही विद्यार्थियों के भीतर अनुशासन, आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता तथा उत्तरदायित्व जैसी विशेषताओं का विकास होता है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके शिक्षित नागरिकों पर निर्भर करती है, इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी का विद्यालय से जुड़ा रहना अत्यंत आवश्यक माना जाता है। किंतु वर्तमान समय में विद्यालय से भागने एवं विद्यालय से अनुपस्थित रहने की समस्या शिक्षा व्यवस्था के समक्ष एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर रही है।

विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति केवल अनुशासनहीनता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों की मानसिक, सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों से गहराई से जुड़ी हुई समस्या है। जब विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में स्वयं को असुरक्षित, उपेक्षित अथवा तनावग्रस्त अनुभव करते हैं, तब वे विद्यालय से दूरी बनाने लगते हैं। धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति विद्यालय से भागने अथवा विद्यालय त्याग का रूप धारण कर लेती है। इस स्थिति का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

मेवात क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा क्षेत्र माना जाता है। यहाँ गरीबी, बेरोज़गारी, अशिक्षा, सामाजिक रूढ़ियाँ तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से विद्यमान हैं। इन परिस्थितियों का प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़ता है। अनेक परिवार आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं, जिसके कारण बच्चों को घरेलू कार्यों, पशुपालन अथवा मजदूरी में लगना पड़ता है। परिणामस्वरूप वे विद्यालय से दूरी बनाने लगते हैं। कई बार अभिभावकों की अशिक्षा एवं शिक्षा के प्रति उदासीनता भी विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति को प्रभावित करती है।

विद्यालय से भागने वाले विद्यार्थियों में मानसिक तनाव, भय, असुरक्षा, आत्मविश्वास की कमी तथा अध्ययन के प्रति अरुचि जैसी समस्याएँ विकसित हो जाती हैं। कुछ विद्यार्थी शिक्षकों के कठोर व्यवहार, दंडात्मक वातावरण एवं सहपाठियों द्वारा उपहास के कारण विद्यालय जाने से बचते हैं। वहीं कुछ विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी कठिनाइयों एवं असफलता के भय के कारण विद्यालय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो जाता है। इस प्रकार विद्यालय से भागने की समस्या विद्यार्थियों की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार दोनों को प्रभावित करती है।

मेवात क्षेत्र में विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा अनेक सामाजिक बाधाओं से प्रभावित होती है। घरेलू कार्यों का बोझ, लैंगिक भेदभाव तथा कम आयु में विवाह जैसी समस्याएँ छात्राओं की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती हैं। दूसरी ओर बालक आर्थिक कारणों से मजदूरी अथवा पारिवारिक व्यवसाय में संलग्न हो जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में विद्यालय से अनुपस्थिति एवं विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। यह समस्या केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास को भी प्रभावित करती है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मेवात क्षेत्र के विद्यालय से भागने वाले छात्र-छात्राओं की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार का विश्लेषण करना है। अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि किन सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं विद्यालयी कारणों से विद्यार्थी विद्यालय से भागते हैं तथा इसका उनके मानसिक एवं शैक्षिक व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है। साथ ही यह अध्ययन विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक सहयोग एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका को भी स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

यह शोध शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षा प्रशासकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष विद्यालयों में छात्र-केंद्रित एवं भयमुक्त वातावरण निर्माण, मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं की व्यवस्था तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन विद्यालय से भागने की समस्या को समझने एवं उसके समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

फिन (1989) – “विद्यालय से अलगाव एवं छात्र सहभागिता का अध्ययन”

फिन द्वारा किए गए इस महत्वपूर्ण अध्ययन में विद्यालयी सहभागिता एवं विद्यालय त्याग के मध्य संबंध का गहन विश्लेषण किया गया। शोध में यह पाया गया कि जिन विद्यार्थियों की विद्यालयी गतिविधियों में भागीदारी कम होती है, वे धीरे-धीरे विद्यालय से मानसिक एवं सामाजिक रूप से अलग होने लगते हैं। अध्ययन के अनुसार विद्यालय केवल औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास

का भी केंद्र होता है। यदि विद्यार्थियों को विद्यालय में सम्मान, प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त नहीं होता, तो उनमें असुरक्षा एवं हीन भावना विकसित होने लगती है। शोध में यह भी स्पष्ट किया गया कि शिक्षकों का व्यवहार, सहपाठियों के साथ संबंध तथा विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की मनोदशा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। जिन विद्यार्थियों को विद्यालय में अपनापन महसूस नहीं होता, वे विद्यालय से अनुपस्थित रहने लगते हैं तथा धीरे-धीरे विद्यालय त्याग की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अध्ययन में विद्यालयी सहभागिता बढ़ाने के लिए सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, परामर्श सेवाओं तथा प्रेरणात्मक शिक्षण पद्धतियों की आवश्यकता पर बल दिया गया।

शर्मा एवं वर्मा (1996) – “ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएँ”

शर्मा एवं वर्मा द्वारा किए गए इस अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं एवं विद्यालय अनुपस्थिति के कारणों का विस्तृत विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि आर्थिक अभाव, अभिभावकों की अशिक्षा, घरेलू कार्यों का बोझ तथा सामाजिक पिछड़ापन विद्यार्थियों की शिक्षा में गंभीर बाधा उत्पन्न करते हैं। अध्ययन के अनुसार ग्रामीण परिवारों में शिक्षा की अपेक्षा आजीविका को अधिक महत्व दिया जाता है, जिसके कारण बच्चों को कम आयु में ही श्रम कार्यों में लगा दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों की विद्यालयी उपस्थिति प्रभावित होती है तथा उनमें पढ़ाई के प्रति अरुचि विकसित होने लगती है। शोध में यह भी पाया गया कि विद्यालयों में पर्याप्त संसाधनों की कमी, शिक्षकों की अनुपस्थिति तथा विद्यालय की दूरी विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त समस्याएँ उत्पन्न करती हैं। अध्ययन में सुझाव दिया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है।

सिंह (2003) – “किशोर विद्यार्थियों की मनोदशा एवं विद्यालयी व्यवहार”

सिंह द्वारा किए गए अध्ययन में किशोर विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति एवं विद्यालयी व्यवहार का गहन अध्ययन किया गया। शोध में यह पाया गया कि किशोरावस्था के दौरान विद्यार्थियों में भावनात्मक अस्थिरता, भय, तनाव, चिंता एवं आत्मविश्वास की कमी अधिक पाई जाती है। अध्ययन के अनुसार यदि विद्यार्थियों को परिवार एवं विद्यालय से भावनात्मक सहयोग प्राप्त नहीं होता, तो उनमें मानसिक असुरक्षा की भावना विकसित होने लगती है। कई विद्यार्थी परीक्षा के भय, असफलता की चिंता तथा शिक्षकों के कठोर व्यवहार के कारण विद्यालय से दूरी बनाने लगते हैं। शोध में यह भी स्पष्ट किया गया कि सहपाठियों द्वारा उपहास एवं सामाजिक तुलना विद्यार्थियों के आत्मसम्मान को प्रभावित करती है। अध्ययन ने विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं की आवश्यकता पर विशेष बल दिया तथा यह सुझाव दिया कि विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

चौधरी (2008) – “विद्यालयी वातावरण एवं छात्र अनुपस्थिति”

चौधरी द्वारा किए गए इस अध्ययन में विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालयों में दंडात्मक वातावरण, शिक्षकों का कठोर व्यवहार तथा अनुशासनात्मक दबाव विद्यार्थियों में भय एवं असुरक्षा की भावना उत्पन्न करते हैं। कई विद्यार्थी अपमान, दंड अथवा असफलता के डर से विद्यालय जाने से बचते हैं। शोध में यह भी पाया गया कि जिन विद्यालयों में शिक्षकों का व्यवहार सहयोगात्मक एवं प्रेरणात्मक होता है, वहाँ विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं शैक्षिक रुचि बेहतर पाई जाती है।

अध्ययन ने यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयों को भयमुक्त एवं छात्र-केंद्रित वातावरण विकसित करना चाहिए, जहाँ विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित एवं सम्मानित महसूस कर सकें।

खान (2013) – “अल्पसंख्यक समुदायों में शिक्षा संबंधी चुनौतियाँ”

खान द्वारा किए गए इस अध्ययन में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े तथा अल्पसंख्यक समुदायों की शिक्षा संबंधी समस्याओं का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि गरीबी, सामाजिक रूढ़ियाँ, लैंगिक भेदभाव तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा में घरेलू कार्यों का बोझ, कम आयु में विवाह तथा सामाजिक प्रतिबंध बड़ी बाधा के रूप में सामने आए। शोधकर्ता ने यह भी पाया कि कई परिवारों में लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि लड़कियों की शिक्षा की उपेक्षा की जाती है। अध्ययन के अनुसार सामाजिक पिछड़ापन विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक व्यवहार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। शोध में शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक जागरूकता अभियान चलाने एवं आर्थिक सहायता योजनाओं की आवश्यकता पर बल दिया गया।

रेड्डी (2021) – “किशोरों में विद्यालय त्याग व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन”

रेड्डी द्वारा किए गए इस अध्ययन में विद्यालय त्याग करने वाले किशोर विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का गहन विश्लेषण किया गया। शोध में पाया गया कि विद्यालय से दूरी बनाने वाले विद्यार्थियों में तनाव, चिंता, आत्महीनता, अवसाद एवं सामाजिक असुरक्षा की भावना अधिक पाई जाती है। अध्ययन के अनुसार पारिवारिक तनाव, विद्यालयी दबाव एवं भविष्य के प्रति अनिश्चितता विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। शोधकर्ता ने यह भी स्पष्ट किया कि जिन विद्यार्थियों को परिवार एवं शिक्षकों का भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता है, उनमें विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है। अध्ययन ने विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श केंद्र स्थापित करने एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल दिया।

कुमार एवं यादव (2022) – “ग्रामीण विद्यार्थियों की विद्यालयी चुनौतियाँ”

कुमार एवं यादव द्वारा किए गए अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की विद्यालयी समस्याओं एवं शैक्षिक चुनौतियों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं की कमी, परिवहन की समस्या, आर्थिक अभाव तथा तकनीकी संसाधनों की अनुपलब्धता विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति को प्रभावित करती है। कई विद्यार्थी विद्यालय तक पहुँचने में कठिनाई का सामना करते हैं, जिसके कारण वे विद्यालय से अनुपस्थित रहने लगते हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रेरणात्मक वातावरण एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के अभाव में विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि कम हो जाती है। अध्ययन में ग्रामीण विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं के विकास तथा विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

मिश्रा (2020) – “विद्यालयी भय एवं विद्यार्थियों का शैक्षिक व्यवहार”

मिश्रा द्वारा किए गए अध्ययन में विद्यालयी भय एवं उसके विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया। शोध में यह पाया गया कि कई विद्यार्थी शिक्षकों के कठोर व्यवहार, परीक्षा के भय एवं सहपाठियों द्वारा उपहास के कारण मानसिक तनाव अनुभव करते हैं। यह तनाव धीरे-धीरे विद्यालय से दूरी बनाने

की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि यदि विद्यालयों में सकारात्मक एवं सहयोगात्मक वातावरण उपलब्ध कराया जाए, तो विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति एवं शैक्षिक व्यवहार में सुधार लाया जा सकता है।

उपरोक्त सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय से भागने एवं विद्यालय अनुपस्थिति की समस्या बहुआयामी है तथा इसके पीछे सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक कारण कार्य करते हैं। विभिन्न विद्वानों ने विद्यार्थियों की मनोदशा, विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक सहयोग एवं सामाजिक परिस्थितियों को इस समस्या का प्रमुख कारण माना है। तथापि मेवात क्षेत्र के विद्यालय से भागने वाले छात्र-छात्राओं की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार पर विशेष रूप से बहुत कम शोध उपलब्ध हैं। यही शोध-अंतराल प्रस्तुत अध्ययन को महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक बनाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य मेवात क्षेत्र के विद्यालय से भागने वाले छात्र-छात्राओं की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार का अध्ययन करना है। अध्ययन में विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति, सामाजिक परिस्थितियों, विद्यालयी वातावरण तथा पारिवारिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है, जिससे विद्यालय से भागने की समस्या के वास्तविक कारणों को समझा जा सके।

अध्ययन क्षेत्र के रूप में मेवात क्षेत्र के विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। मेवात क्षेत्र सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होने के कारण यहाँ विद्यालय अनुपस्थिति एवं विद्यालय से भागने की समस्या अधिक पाई जाती है। अध्ययन में विशेष रूप से उन विद्यालयों को सम्मिलित किया गया जहाँ विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति एवं विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति अधिक देखी गई।

अध्ययन की जनसंख्या में मेवात क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया। अध्ययन हेतु कुल 450 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया, जिनमें विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति वाले, अनियमित उपस्थिति रखने वाले तथा विद्यालय के प्रति अरुचि प्रदर्शित करने वाले विद्यार्थी सम्मिलित थे। नमूना चयन के लिए यादृच्छिक नमूना चयन विधि एवं उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि का उपयोग किया गया। उद्देश्यपूर्ण चयन के माध्यम से उन विद्यार्थियों को चुना गया जिनमें विद्यालय से अनुपस्थिति अथवा विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दी, जबकि यादृच्छिक चयन द्वारा नमूने को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण बनाया गया।

तथ्य संकलन के लिए संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से विद्यार्थियों की मनोदशा, विद्यालयी रुचि, पारिवारिक वातावरण तथा सामाजिक परिस्थितियों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। साक्षात्कार के माध्यम से विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के विचारों को समझने का प्रयास किया गया। अवलोकन विधि द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार, विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता तथा विद्यालयी वातावरण का प्रत्यक्ष अध्ययन किया गया।

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के तथ्यों का उपयोग किया गया। प्राथमिक तथ्य विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किए गए, जबकि द्वितीयक तथ्य पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, सरकारी रिपोर्टों तथा शिक्षा संबंधी दस्तावेजों से संकलित किए गए।

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि, औसत, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों को तालिकाओं एवं व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे विद्यार्थियों की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार का स्पष्ट विश्लेषण किया जा सके। अध्ययन की वैधता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए प्रश्नावली का पूर्व परीक्षण किया गया तथा विषय विशेषज्ञों से परामर्श प्राप्त किया गया।

अध्ययन के दौरान नैतिक पक्षों का भी विशेष ध्यान रखा गया। सभी प्रतिभागियों की गोपनीयता बनाए रखी गई तथा उनसे प्राप्त जानकारी का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्य के लिए किया गया। विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की सहमति प्राप्त करने के पश्चात ही अध्ययन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया।

परिणाम

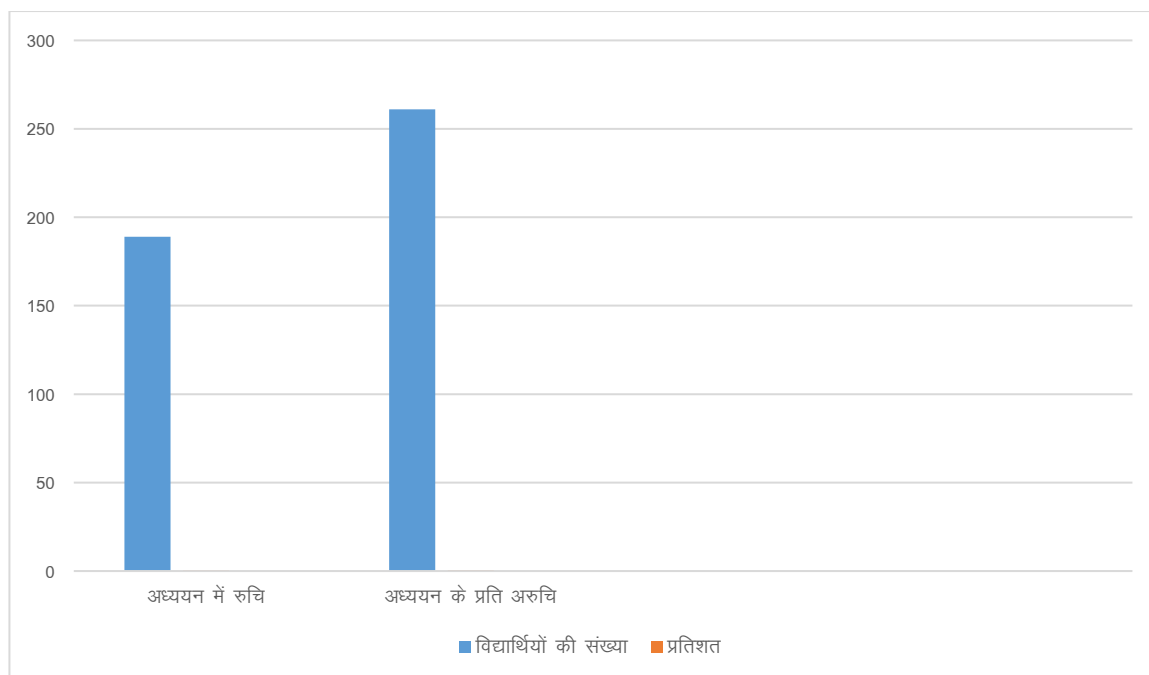
प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि मेवात क्षेत्र में विद्यालय से भागने की समस्या विद्यार्थियों की मनोदशा, पारिवारिक परिस्थितियों एवं विद्यालयी वातावरण से गहराई से जुड़ी हुई है। अध्ययन में यह पाया गया कि अनेक विद्यार्थी मानसिक तनाव, भय, असुरक्षा तथा अध्ययन के प्रति अरुचि के कारण विद्यालय से दूरी बनाने लगते हैं। आर्थिक अभाव, पारिवारिक दबाव तथा शिक्षकों का कठोर व्यवहार भी विद्यार्थियों की विद्यालयी उपस्थिति को प्रभावित करता है।

अध्ययन के दौरान यह भी देखा गया कि विद्यालय से भागने वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी, सामाजिक संकोच एवं भविष्य के प्रति अनिश्चितता की भावना अधिक पाई गई। जिन विद्यार्थियों को परिवार एवं शिक्षकों का सहयोग प्राप्त था, उनमें विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक देखा गया। इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों को विद्यालयी वातावरण भयपूर्ण अथवा तनावपूर्ण लगा, उनमें विद्यालय से अनुपस्थित रहने की प्रवृत्ति अधिक पाई गई।

तालिका 1

विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि की स्थिति

क्रम संख्या	अध्ययन के प्रति स्थिति	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	अध्ययन में रुचि	189	42%
2	अध्ययन के प्रति अरुचि	261	58%

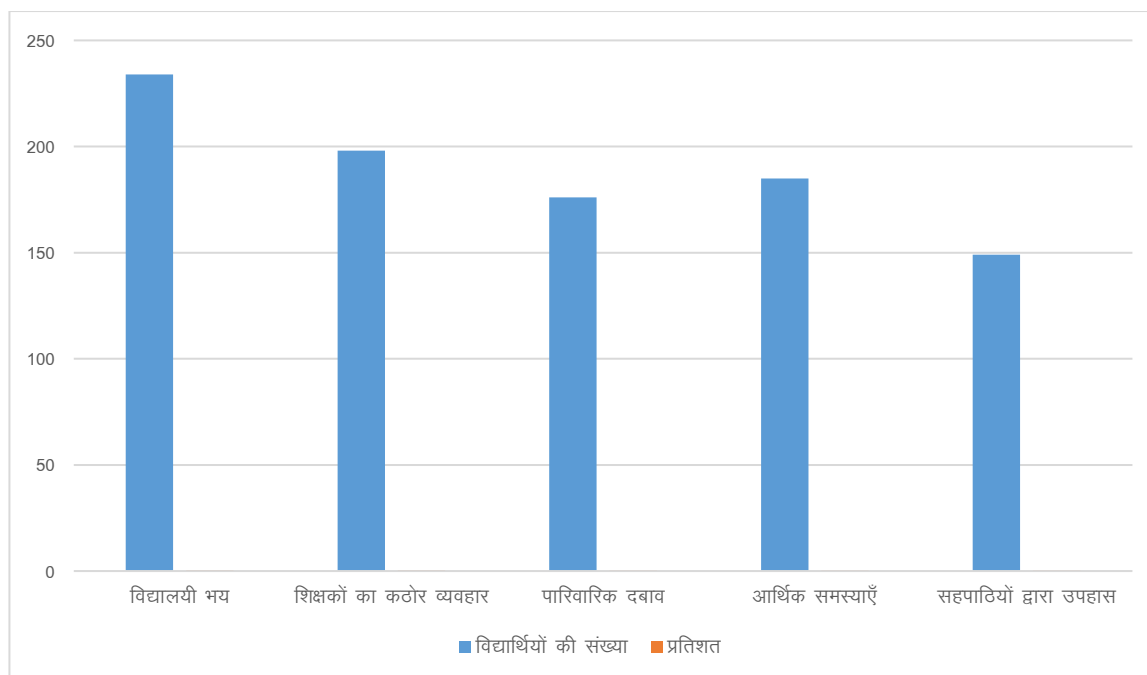


उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 58 प्रतिशत विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति अरुचि पाई गई। ऐसे विद्यार्थियों ने पढ़ाई को तनावपूर्ण एवं कठिन अनुभव किया। वहीं 42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अध्ययन में सामान्य रुचि दिखाई। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

तालिका 2

विद्यालय से भागने के प्रमुख कारण

क्रम संख्या	कारण	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	विद्यालयी भय	234	52%
2	शिक्षकों का कठोर व्यवहार	198	44%
3	पारिवारिक दबाव	176	39%
4	आर्थिक समस्याएँ	185	41%
5	सहपाठियों द्वारा उपहास	149	33%

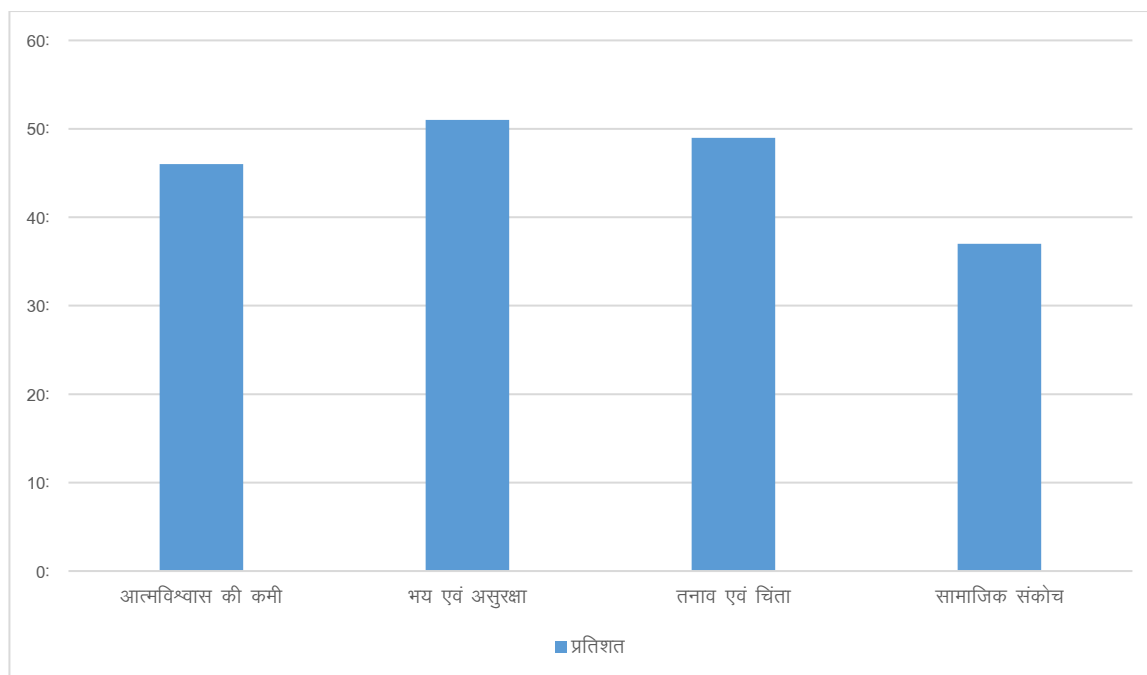


तालिका से ज्ञात होता है कि 52 प्रतिशत विद्यार्थियों ने विद्यालयी भय को विद्यालय से भागने का प्रमुख कारण माना। 44 प्रतिशत विद्यार्थियों ने शिक्षकों के कठोर व्यवहार को अपनी अनुपस्थिति का कारण बताया। आर्थिक समस्याएँ एवं पारिवारिक दबाव भी विद्यार्थियों की विद्यालयी उपस्थिति को प्रभावित करते पाए गए। कुछ विद्यार्थियों ने सहपाठियों द्वारा उपहास एवं अपमान को भी विद्यालय से दूरी बनाने का कारण माना।

तालिका 3

विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक स्थिति

क्रम संख्या	मनोवैज्ञानिक समस्या	प्रतिशत
1	आत्मविश्वास की कमी	46%
2	भय एवं असुरक्षा	51%
3	तनाव एवं चिंता	49%
4	सामाजिक संकोच	37%

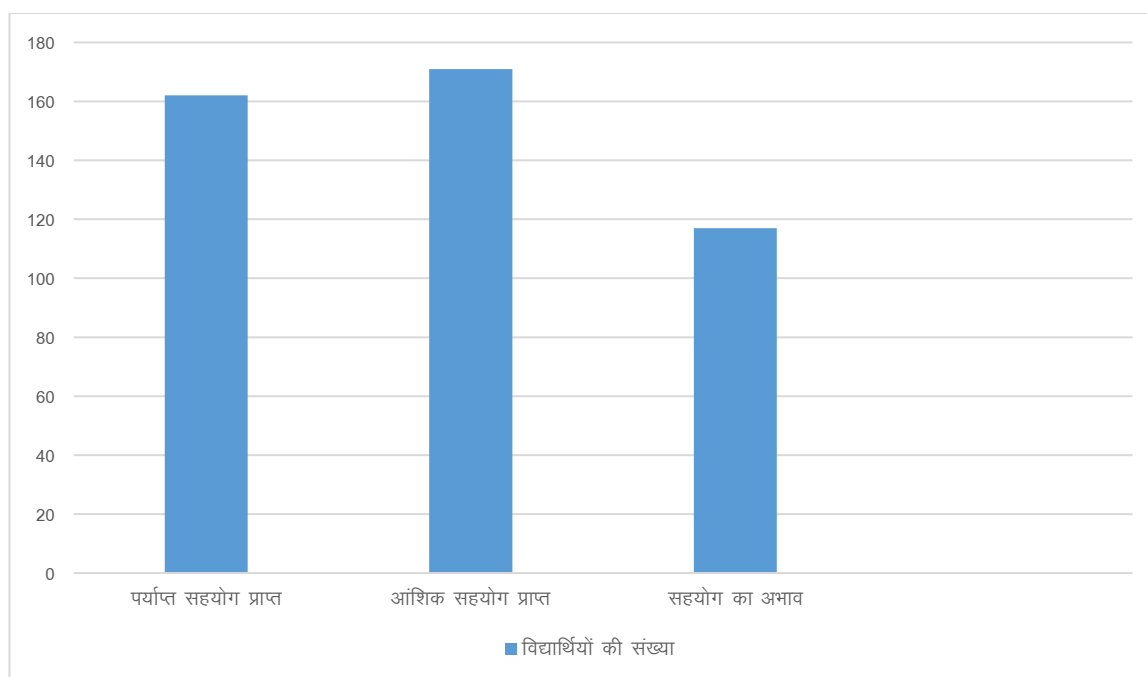


उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यालय से भागने वाले विद्यार्थियों में भय एवं असुरक्षा की भावना सर्वाधिक पाई गई। लगभग 46 प्रतिशत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी देखी गई। मानसिक तनाव एवं चिंता भी विद्यार्थियों की विद्यालयी उपस्थिति एवं शैक्षिक व्यवहार को प्रभावित करते पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालय से भागने की समस्या विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य से भी जुड़ी हुई है।

तालिका 4

अभिभावकीय एवं शिक्षक सहयोग का प्रभाव

क्रम संख्या	सहयोग की स्थिति	विद्यार्थियों की संख्या	विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति
1	पर्याप्त सहयोग प्राप्त	162	कम
2	आंशिक सहयोग प्राप्त	171	मध्यम
3	सहयोग का अभाव	117	अधिक



तालिका से स्पष्ट होता है कि जिन विद्यार्थियों को शिक्षकों एवं अभिभावकों का पर्याप्त सहयोग प्राप्त था, उनमें विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम पाई गई। इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों को सहयोग नहीं मिला, उनमें विद्यालय से भागने की संभावना अधिक देखी गई। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की शिक्षा एवं मानसिक संतुलन बनाए रखने में परिवार एवं शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

अध्ययन के समग्र परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय से भागने की समस्या केवल अनुशासन से संबंधित विषय नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति, सामाजिक परिस्थितियों एवं विद्यालयी वातावरण से गहराई से जुड़ी हुई समस्या है। यदि विद्यार्थियों को सकारात्मक वातावरण, भावनात्मक सहयोग एवं प्रेरणात्मक शिक्षण उपलब्ध कराया जाए, तो विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

विमर्श

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय से भागने की समस्या केवल अनुशासनहीनता अथवा व्यक्तिगत व्यवहार से संबंधित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों की मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों से गहराई से जुड़ी हुई है। अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यार्थियों की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार पर सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जिन विद्यार्थियों में भय, असुरक्षा, तनाव एवं आत्मविश्वास की कमी अधिक पाई गई, उनमें विद्यालय से अनुपस्थित रहने अथवा विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति भी अधिक देखी गई।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के व्यवहार निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन विद्यालयों में शिक्षकों का व्यवहार सहयोगात्मक एवं प्रेरणात्मक था, वहाँ विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति रुचि अधिक पाई गई। इसके विपरीत कठोर एवं दंडात्मक वातावरण विद्यार्थियों में मानसिक तनाव एवं विद्यालयी भय उत्पन्न करता है। कई विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया कि शिक्षकों के कठोर व्यवहार, अपमान एवं

दंड के भय के कारण वे विद्यालय जाने से बचते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में भयमुक्त एवं छात्र-केंद्रित वातावरण विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन के दौरान यह भी पाया गया कि पारिवारिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपस्थिति एवं व्यवहार को प्रभावित करती हैं। जिन विद्यार्थियों को परिवार से भावनात्मक सहयोग एवं प्रोत्साहन प्राप्त हुआ, उनमें विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम थी। इसके विपरीत आर्थिक संकट, पारिवारिक तनाव एवं अभिभावकों की अशिक्षा विद्यार्थियों की शिक्षा में बाधक सिद्ध हुई। कई विद्यार्थियों को घरेलू कार्यों एवं आर्थिक जिम्मेदारियों के कारण विद्यालय से अनुपस्थित रहना पड़ा। इससे यह स्पष्ट होता है कि परिवार एवं विद्यालय दोनों की संयुक्त भूमिका विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन में विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक स्थिति का भी विश्लेषण किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि विद्यालय से भागने वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी, तनाव, चिंता एवं सामाजिक संकोच अधिक पाया गया। ऐसे विद्यार्थी स्वयं को अन्य विद्यार्थियों की तुलना में कमजोर अनुभव करते हैं तथा धीरे-धीरे शिक्षा के प्रति उनकी रुचि कम होने लगती है। यदि समय रहते इन समस्याओं का समाधान नहीं किया जाए, तो विद्यार्थी विद्यालय से पूर्णतः विमुख हो सकते हैं। इसलिए विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं की व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, प्रेरणात्मक शिक्षण पद्धति एवं शिक्षक-विद्यार्थी के मधुर संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होते हैं। यदि विद्यार्थियों को विद्यालय में सम्मान, सहयोग एवं भावनात्मक सुरक्षा का अनुभव हो, तो विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि विद्यालय से भागने की समस्या बहुआयामी है तथा इसके समाधान के लिए सामाजिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। शिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज को मिलकर विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक एवं सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण करना चाहिए, जिससे वे शिक्षा के प्रति प्रेरित हो सकें।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय से भागने की समस्या केवल अनुशासनहीनता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से गहराई से जुड़ी हुई है। विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी परिस्थितियाँ एवं सामाजिक प्रभाव उनके शैक्षिक व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। मेवात क्षेत्र में गरीबी, अभिभावकों की अशिक्षा, सामाजिक पिछड़ापन तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी विद्यालय से भागने की समस्या को बढ़ाने वाले प्रमुख कारण हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यालय से भागने वाले विद्यार्थियों में भय, असुरक्षा, आत्मविश्वास की कमी एवं अध्ययन के प्रति अरुचि जैसी समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं। मानसिक तनाव एवं भावनात्मक अस्थिरता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करती है तथा उनके व्यक्तित्व विकास में बाधा उत्पन्न करती है। यदि विद्यार्थियों

को समय पर उचित मार्गदर्शन एवं भावनात्मक सहयोग प्राप्त न हो, तो वे धीरे-धीरे शिक्षा से पूर्णतः विमुख हो सकते हैं।

शोध के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को भावनात्मक सहयोग, मनोवैज्ञानिक परामर्श एवं प्रेरणात्मक वातावरण प्रदान कर विद्यालय से भागने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। विद्यालयों में छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति अपनाई जानी चाहिए, जहाँ विद्यार्थियों को भयमुक्त एवं सहयोगात्मक वातावरण प्राप्त हो सके। शिक्षकों को विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार अपनाना चाहिए तथा उनकी मानसिक समस्याओं को समझने का प्रयास करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क अध्ययन सामग्री एवं अन्य सहायता योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाना चाहिए। विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा संबंधी जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए, ताकि विद्यार्थी शिक्षा के महत्व को समझ सकें।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालय से भागने की समस्या का समाधान केवल विद्यालय स्तर पर संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए परिवार, समाज एवं सरकार के संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं। छात्र-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था, सकारात्मक विद्यालयी वातावरण एवं सामाजिक जागरूकता इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याओं को समझने एवं शिक्षा से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

संदर्भ सूची

- शर्मा, आर. (2017). किशोर मनोविज्ञान एवं शिक्षा। नई दिल्ली: एपीएच प्रकाशन।
- वर्मा, एस. (2020). विद्यालयी व्यवहार एवं छात्र समस्याएँ। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- सिंह, डी. (2019). ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की चुनौतियाँ। आगरा: साहित्य भवन।
- कुमार, एल. (2018). शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन। नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
- चौहान, पी. (2021). विद्यालयी वातावरण एवं छात्र व्यवहार। जयपुर: हिंदी साहित्य प्रकाशन।
- मिश्रा, के. (2016). विद्यालयी भय एवं विद्यार्थियों की मनोदशा। वाराणसी: ज्ञानदीप प्रकाशन।
- यादव, एम. (2022). ग्रामीण विद्यार्थियों का शैक्षिक व्यवहार। लखनऊ: भारतीय शिक्षा संस्थान।
- खान, ए. (2015). अल्पसंख्यक समुदाय एवं शिक्षा की समस्याएँ। अलीगढ़: शैक्षिक प्रकाशन।
- रेड्डी, आर. (2021). किशोरों में विद्यालय त्याग व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन। हैदराबाद: शिक्षा शोध प्रकाशन।
- चौधरी, एल. (2018). विद्यालयी अनुशासन एवं छात्र विकास। जयपुर: साहित्य भवन।